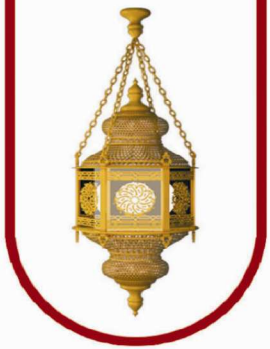

PEER PAR ETIRAAZ MANA HE (HINDI)

त़रीक़त के पुर ख़त़र रास्तों पर चलने वालों की
रहनुमाई के लिये एक पुरअषर तह़रीरी बयान

पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है

- मुजरिम से मुंह मोड़ लो 2
- कामिल पीर पर ए'तिराज़ के नव अस्बाब 15
- मुरीद के लिये ज़हरे क़ातिल 26
- पीर मा'सूम नहीं 29
- नाकाम मुरीद 46
- मुर्शिद की इत़ाअ़त का सदक़ा 51

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

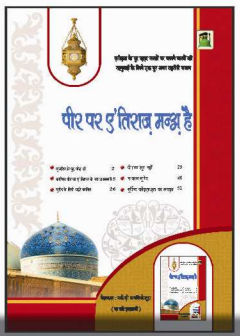

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخِ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात कम हों** या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी-गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" ने येह रिसाला "**पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है**" उर्दू ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी-गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की **राष्ट्रिय भाषा** "**हिन्दी**" में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-

(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (·) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सह़ीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐन मुताबिक़ ही **हिन्दी-जोडणी** (spelling) रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ़-लमा** (عُلَمَاء) में "**-ल**" मफ़तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में "**ह़्**" साकिन है।

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" और "رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ु = ُ	ू = ٗ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ृ = ؤ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है (1)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی الصلوۃ علی النبی۔۔۔ الخ، الحدیث: ۱۷۲۹۸، ج۱۰، ص۲۵۳)

जाता है तो जाने दो

एक लड़का घर से भागने का आ़दी था, बार बार भागता और मां-बाप उसे तलाश करते फिरते। जब ढूंड कर लाते तो फिर कुछ

1....मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रते मौलाना ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِی ने येह बयान शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शबे विलादत **26** रमज़ानुल मुबारक **1428** हि. ब मुत़ाबिक़ अक्तूबर **2007** ई. को तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में फ़रमाया। **24** शव्वालुल मुकर्रम **1433** हि. ब मुत़ाबिक़ **12** सितम्बर **2012** ई. को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है।

(शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी, **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**)

अ़र्से के बा'द भाग जाता, आख़िरे कार मां-बाप उस के बार बार भागने से तंग आ गए और एक मर्दे कामिल की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, कि हमारा लड़का यूं करता है। उस मर्दे कामिल ने कहा : "तुम्हारी महब्बत की ज़ियादती ने उस को ऐसा बना दिया है, अब अगर भागे तो तुम उस की परवा न करना, ख़ुद परेशान हो कर जब वापस आएगा तो कभी न भागेगा।" चुनान्चे, मां-बाप ने ऐसा ही किया और उस मर्दे क़लन्दर की बात पर अ़मल किया और उसे न ढूंडा, आख़िरे कार परेशान ह़ाल दुखी, ठोकरें खाता, गिरता पड़ता मां-बाप के पास पहुंचा तो फिर कभी मां-बाप को छोड़ कर न गया।

(तफ़्सीरे नईमी, जि, 2 स. 427)

मुजरिम से मुंह मोड़ लो

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़क़ीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : शैख़े त़रीक़त को चाहिये कि मुरीदीन की एक दो ग़लत़ियां तो मुआ़फ़ करे लेकिन जब महसूस करे कि मुरीद जुर्म का आ़दी हो चुका है तो उस से तअ़ल्लुक़ तोड़ दे, उसे ख़ुद से बिल्कुल दूर कर दे, अब वोह कितनी ही आहोज़ारी करे कितना ही रोए धोए मगर उसे अपने पास न बुलाए, बल्कि उस से कहे : कुछ दिन मुजरिमों के साथ रह कर उन का अन्जाम देख, फिर जब तुझे उन की ह़रकात से पूरी नफ़रत हो जाए तब मेरे पास आना कि तुझे हमारी सोह़बत की क़द्र हो और फिर तू

जुर्म से बाज़ रह। मज़ीद फ़रमाते हैं : **कभी फ़िराक़ (जुदाई) भी ज़रीअ़ए विसाले दाइमी (हमेशा के मिलाप का ज़रीआ़) हो जाता है, हिज्र (जुदाई) से वस्ल की क़द्र होती है।**

(तफ़्सीरे नई़मी, जि.2 स. 426 ब ह़वाला तफ़्सीरे रूहुल बयान, जि.1 स.359)

पीर की नाराज़ी

मा'लूम हुवा अगर किसी ग़लती पर पीर साह़िब जलाल फ़रमा दें या पूछगछ कर लें तो बुरा नहीं मनाना चाहिये अगर्चे बसा अवक़ात नफ़्स पर गिरां गुज़रता है और ऐसे मौक़अ़ पर शैत़ान भी नादान मुरीदों के दिल में बदगुमानी की आग को ख़ूब भड़काता है जिस में नादान मुरीदों को अकषर मुब्तला होते भी देखा गया है। लिहाज़ा ऐसे मवाक़ेअ़ पर याद रखना चाहिये कि जिस त़रह़ मुरीद पर पीर के हुक़ूक़ हैं इसी त़रह़ पीर पर भी मुरीद के कुछ हुक़ूक़ हैं। जिन में सरे फ़ेहरिस्त मुरीद की इस्लाह़ व हिदायत के लिये हमातन कोशां रहना है और इस्लाह़ के लिये नर्मी व गर्मी दोनों की ज़रूरत पड़ती है। जैसा कि मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : उस्ताद शागिर्दों पर और पीर मुरीदों पर नाराज़ हो सकता है।

(مرآۃ المناجیح، کتاب الایمان، باب القدر، الفصل الثانی، ج۱، ص۱۰۷)

मुर्शिद को फ़ौरन राज़ी कर लो

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی (मुतवफ़्फ़ा 973 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि जब किसी का मुर्शिद

उस से नाराज़ हो जाए और उसे अपनी ख़ता व ग़लती या क़ुसूर भी मा'लूम न हो तब भी उस पर लाज़िम है कि फ़ौरन ही अपने मुर्शिद को राज़ी करने की कोशिश में लग जाए। क्यूंकि जो मुरीद फ़ौरन अपने मुर्शिद को राज़ी करने की कोशिश न करे तो येह उस की नाकामी की दलील व अ़लामत है। मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने अपने पांच साला बेटे को येह कहते सुना कि अब्बाजान ! सच्चा मुरीद वोह है कि जब मुर्शिद उस पर नाराज़ हो जाए तो उस की रूह निकलने के क़रीब आ जाए और वोह न खाए न पिये न हंसे और न सोए, यहां तक कि उस के पीरो मुर्शिद उस से राज़ी हो जाएं।

(الانوار القدسیہ فی معرفۃ قواعد الصوفیہ، الجزء الثانی، ص ۴۷)

दुआ़ मंगया करो संगियो !
कित्ते मुर्शिद न रुस जावे
जिन्हां दे पीर रुस जांदे
ओ जीन्दे जी मरे रहन्दे

मुरीदों को राज़ी करने वाला पीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! दीगर आ'माल व अ़क़ाइद की त़रह़ हम त़रीक़त के मैदान में भी कमज़ोर होते जा रहे हैं। आज के दौर में पहले जैसे पीरे कामिल कहीं नज़र आते हैं न मुरीदे कामिल। अगर कहीं पीर कामिल है तो मुरीद कामिल नहीं और अगर मुरीद कामिल है तो पीर कामिल

और जामेअ़ शराइत़ नहीं कि मुरीद उख़रवी नजात के हुसूल के लिये अपने पीर की रिज़ा चाहे और उस के लिये कोशिश करे। मगर इस पुर फ़ितन दौर में एक हस्ती ऐसी भी है जिस का अन्दाज़ बाक़ी जहां से निराला है और वोह हस्ती हैं **पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه । आप की ह़याते त़य्यिबा का मुशाहदा करने वाले इस्लामी भाई इस बात से ब ख़ूबी आगाह हैं कि आप का किसी मुरीद से नाराज़ होना तो दर कनार, अगर किसी मुरीद की इस्लाह़ फ़रमाते हुवे या किसी भी वजह से येह ख़याल भी आप के दिल में पैदा हो जाए कि फ़ुलां इस्लामी भाई की मेरी वजह से दिल आज़ारी हुई है तो उस से मुआ़फ़ी मांगने में ज़र्रा बराबर देर नहीं फ़रमाते। चुनान्चे,

22 रबीउ़न्नूर शरीफ़ **1431** हि. को अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में कुछ ज़िम्मेदाराने जामिआ़तुल मदीना ह़ाज़िर थे। एक मदनी इस्लामी भाई ने अ़र्ज़ की : हमारे ह़ैदराबाद के त़लबा अपने अपने किराए पर बाबुल मदीना के तर्बिय्यती इजतिमाअ़ में आए हैं। इस पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तह़सीन के कलिमात अदा करने के बा'द फ़रमाया कि **आप का शहर क़रीब है किराया कम लगता है, पंजाब वाले भी अपने**

अपने किराए पर आए हैं इन मा'नों में वोह ज़ियादा लाइक़े तह़सीन हैं । कुछ देर बा'द नमाज़े इशा का वक़्त हो गया और वोह मदनी इस्लामी भाई दोबारा किसी वजह से ख़िदमत में ह़ाज़िर न हो सके तो **24** रबीउ़न्नूर शरीफ़ **1431** हि. को वक़्ते सह़री मौजूद इस्लामी भाइयों से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूम फ़रमाया कि वोह कहां हैं ? उन्हें मौजूद न पा कर एक लिफ़ाफ़ा ज़िम्मेदार इस्लामी भाई के ह़वाले करते हुवे इरशाद फ़रमाया : रात जिन मदनी इस्लामी भाई से ह़ैदराबाद के त़लबा के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू हुई थी उन्हें पहुंचा दीजिये ।

जब उन मदनी इस्लामी भाई ने लिफ़ाफ़ा खोला तो उस में मौजूद **100** रूपे का नोट और आ़जिज़ी व ख़ौफ़े ख़ुदा में डूबी तह़रीर पढ़ कर वोह आब दीदह हो गए, उस में कुछ यूं तह़रीर था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से मेरे मीठे मीठे मदनी बेटे.....سَلَّمَهُ الْغَنِی की ख़िदमत में गुम्बदे ख़ज़रा को चूमता हुवा सलाम ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को दीनो दुन्या की बरकतों से माला माल फ़रमाए, आमीन ।

22 रबीउ़न्नूर **1431** हि. ब शुमूले शुमा (आप समेत) कुछ ज़िम्मेदाराने जामिआ़तुल मदीना तशरीफ़ फ़रमा थे, आप ने फ़रमाया

कि हमारे ह़ैदराबाद के त़लबा अपने अपने किराए पर बाबुल मदीना के तर्बिय्यती इजतिमाअ़ में आए हैं, इस पर तह़सीन के फ़ौरन बा'द मेरे मुंह से निकला कि "**आप का शहर क़रीब है किराया कम लगता है, पंजाब वाले भी अपने किराए पर आए हैं।**"

अपनी सबक़ते लिसानी पर नादिम हूं, डरता हूं कहीं आप की दिल शिकनी न हो गई हो, अगर येह ईज़ा रसानी थी तो तौबा करता हूं, आप से भी मुआ़फ़ी मांगता हूं, मुझे वोह जुम्ला न कहना चाहिये था, बराए करम, मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। जो इस्लामी भाई उस वक़्त ह़ाज़िर थे मुमकिन हो तो उन को भी मेरी तौबा पर मुत्त़लअ़ फ़रमा कर एह़सान बालाए एह़सान फ़रमा दीजिये। चाहें तो उन को मेरी त़हरीर का अ़क्स भी दे सकते हैं, मुझे मुआ़फ़ी से नवाज़ कर मुत्त़लअ़ फ़रमा दीजिये तो करम बालाए करम होगा।

मदनी फूल :- اَلسِّرُّ بِالسِّرِّ وَالْعَلَانِيَةُ بِالْعَلَانِيَةِ या'नी ख़ुफ़्या गुनाह की ख़ुफ़्या तौबा और अ़लानिय्या की अ़लानिय्या।

(المعجم الکبیر للطبرانی، حدیث: ۳۳۱، ج ۲۰، ص ۱۵۹)

100 रूपे आप की नज़्र हैं, चाहें तो मिठाई खा कर ग़म ग़लत़ कर कीजिये। **24** रबीउ़न्नूर शरीफ़ **1431**हि.

मा'लूम हुवा कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जहां **हुक़ूक़ुल्लाह** के मुआ़मले में ह़द दरजा मोह़तात़ हैं वहां **हुक़ूक़ुल इबाद** के मुआ़मले में भी बेह़द एह़तियात़ बरतते हैं।

चुनान्चे, आप फ़रमाते हैं : **हुक़ूक़ुल्लाह** अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो अपनी रह़मत से मुआ़फ़ फ़रमा देगा मगर **हुक़ूक़ुल इबाद** का मुआ़मला सख़्त तर है कि जब तक वोह बन्दा जिस का ह़क़ तलफ़ किया गया है, मुआ़फ़ नहीं करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मुआ़फ़ नहीं फ़रमाएगा अगर्चे येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वाजिब नहीं मगर उस की मरज़ी येही है कि जिस का ह़क़ तलफ़ किया गया है उस से मुआ़फ़ी मांग कर राज़ी किया जाए।

हज़ारों के मजमअ़ में मुआ़फ़ी

ज़िल्अ़ मुज़फ़्फ़र गढ़ (पंजाब) के क़स्बा गुजरात के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : ग़ालिबन **1988** में पता चला कि क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **कोट अद्दू** बयान के लिये तशरीफ़ ला रहे हैं। हमारे चचा ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मुल्तान से **कोट अद्दू** जाते हुवे रास्ते में हमारा क़स्बा **गुजरात** आता है, अगर करम फ़रमाएं और हमारे घर की दा'वत क़बूल फ़रमा लें तो मेहरबानी होगी। आप ने शफ़्क़त फ़रमाते हुवे हां कर दी और यूं हमारे क़स्बे में आने का तै़ हो गया। सारे ख़ानदान में ख़ुशी की लहर दौड़ गई और क़स्बें में हर त़रफ़ धूम मच गई कि ज़माने के वली तशरीफ़ ला रहे हैं। घर के अफ़राद ने ख़ुशी में नए कपड़े पहने, घर को साफ़ करने और सजाने

का एहतिमाम किया गया, मैदान में पानी का छिड़काव करवाया गया। इन्तिज़ार होता रहा मगर आप तशरीफ़ न ला सके। सब को तश्वीश हुई कि "**अल्लाह** ख़ैर करे" बहर हाल वक़्त गुज़रने के बा'द वालिद और चचा शिकस्ता दिली से इजतिमाअ़ में शिर्कत के लिये **कोट अद्दू** रवाना हो गए। इजतिमाअ़ कषीर था, मगर जब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मंच पर तशरीफ़ लाए और आप की नज़र मेरे चचा पर पड़ी तो आप ने हज़ारों लोगों के सामने चचा के आगे हाथ जोड़ लिये और फ़रमाया : **मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दें मैं आप के घर ह़ाज़िर न हो सका, आप की दिल आज़ारी हुई होगी।**

येह देख कर चचा की आंखों से आंसू बह निकले, बा'द में मा'लूम हुवा कि ड्राईवर की ग़लती से **कोट अद्दू** के लिये वोह रास्ता इख़्तियार किया गया जिस रास्ते में हमारा क़स्बा नहीं पड़ता था और यूं सब दूसरे रास्ते से **कोट अद्दू** जा पहुंचे। अब वक़्त इतना हो चुका था कि वापसी मुमकिन न थी।

ईह तन मेरा चश्मां होवे, मुर्शिद वीख नह रज्जां हू
लूं लूं दे मुढ लख लख चश्मां हिक खुलां हिक कज्जां हू
इतयां डिठयां सब्र न आवे होर कित्ते वल बहज्जां हू
मुर्शिद दा दीदार है बाहू लख करोडां ह़ज्जां हू

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी व मफ़्हूम

ईह तन मेरा (मेरा येह सारा जिस्म), चश्मां (आंखें), रज्जां (जी भर जाना), लूं लूं (बदन का हर एक अंग, जुज़), मुढ (जड़), कज्जां (बंद करना, ढक देना), कित्ते वल (किस त़रफ़), बहज्जां (भागना), मुर्शिद दा दीदार (मुर्शिद की ज़ियारत) ।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ान बाहू رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपने मश्हूरे ज़माना आ़रिफ़ाना कलाम में फ़रमाते हैं : काश मेरा येह सारा बदन आंख बन जाए, बल्कि हर रूएं के साथ लाखों आंखें पैदा हो जाएं ताकि एक बन्द करूं तो दूसरी खुल जाए फिर भी मेरा जी मुर्शिद के दीदार से न भरेगा । इस क़दर देखने के बा वुजूद भी किसी करवट क़रार नहीं क्यूंकि दूसरा उस जैसा कोई है ही नहीं कि जिस की त़रफ़ भाग कर जाऊं, बल्कि मुर्शिद की ज़ियारत तो मेरे लिये लाख करोड़ ह़ज के बराबर है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन का अपने पीरो मुर्शिद और अमीर से मुआ़फ़ी मांगना तो समझ में आता है मगर एक ऐसी हस्ती जो मरजए़ ख़लाइक़ हो और लाखों मुसलमान

उस के दामने करम से वाबस्ता हो कर उस के मुरीद बन चुके हों, वोह इस त़रह़ आ़जिज़ी अपनाते हुवे अपने मुरीदों से मुआ़फ़ी मांगने में आ़र महसूस न करे तो येही कहा जा सकता है कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर ख़ुसूसी करम है। आप का येह अन्दाज़ हर मुसलमान के लिये मश्अ़ले राह है।

मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर

चोर डाकू आंदे ने, नमाज़ी बन जांदे ने
आ़शिक़ लंदन पेरिस दे ह़ाजी बन जांदे ने
मिठा मुर्शिद देखो तक़्दीरां ऐ संवार दा

मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर

मुर्शिद दा दीदार वे बाहू, लख करोड़ां ह़ज्जां हू
किन्नी प्यारी गल ऐ दस्सी सानूं ह़ज़रत बाहू
जल्वा देखो मुर्शिद दा, सीना पया ठारदा

मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर

न मैं आ़लिम न मैं ह़ाफ़िज़ न मैं नाज़िम न मैं क़ारी
मुर्शिद नाल होई यारी हो गया यारो अ़त्तारी
शाला रखे क़ाइम रिश्ता सगे अ़त्तार दा

मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर, मेरा पीर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाशुक्री

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : जिस पर कोई एह़सान किया जाए और वोह त़ाक़त रखता हो तो उस एह़सान का बदला ज़रूर दे वरना एह़सान करने वाले की ता'रीफ़ ही कर दे क्यूं कि जिस ने एह़सान करने वाले की ता'रीफ़ की उस ने शुक्रिया अदा किया और जिस ने किसी के एह़सान को छुपाया उस ने नाशुक्री की ।

(ترمذی، ابواب البر والصلۃ، باب ماجاء فی المتشبع۔۔۔الخ، الحدیث: ۲۰۴۱، ج۲، ص۴۱۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! जब किसी का एह़सान छुपाना कुफ़्राने ने'मत या'नी नाशुक्री है तो उस शख़्स की नाशुक्री का आ़लम क्या होगा जो अपने सब से बड़े मोह़सिन या'नी पीरो मुर्शिद के एह़सान को यक लख़्त भुला दे जिन की बरकत से उसे अपनी और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की पहचान मिली । चुनान्चे,

फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने ह़ज़रत शाह **वलिय्युल्लाह** देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का येह क़ौल नक़्ल फ़रमाया है कि शैख़ की ता'ज़ीम ख़ालिक़े काइनात की ता'ज़ीम है और शैख़ की ने'मत का शुक्र इस ने'मत को अ़त़ा करने वाले **अल्लाह** का शुक्र है ।

(فتاویٰ رضویہ، ج۲۷، ص ۸۵۔۔۔ کلماتِ طیبات فصل چہارم در مکتوبات شاہ ولی اللہ دہلوی مطبع مجتبائی دہلی ص ۱۶۳)

जो शख़्स अपने मोह़सिन के एह़सानात भूल जाए, उन का तज़किरा करे न शुक्रिया अ़दा करे तो वोह कुर्बे ख़ुदावन्दी से भी महरूम रहता है । जैसा कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार नहीं हो सकता ।

(ابوداود، کتاب الادب، باب فی شکر المعروف، الحدیث: ۴۸۱۱، ج۴، ص۳۳۵)

पीरे कामिल को तक्लीफ़ देना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जिस ने किसी मुसलमान को तक्लीफ़ दी उस ने मुझे तक्लीफ़ दी और जिस ने मुझे तक्लीफ़ दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तक्लीफ़ दी । (المعجم الاوسط، الحدیث: ۳۶۰۷، ج۲، ص۳۸۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जब किसी आ़म इस्लामी भाई को तक्लीफ़ देना ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाला काम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ देना है तो जो बद नसीब अपने पीरो मुर्शिद की दिल आज़ारी का बाइ़ष बने क्या उस पर रब तआ़ला ग़ज़ब न फ़रमाता होगा ? चुनान्चे,

औलियाए कामिलीन से दुश्मनी का वबाल

मरवी है कि एक दिन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए तो क्या देखते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर के पास बैठे अश्क बहा रहे हैं, सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बताया कि मुझे उस बात ने रुलाया है जो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी है कि थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से दुश्मनी की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग किया।

(ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب من ترجی لہ السلامۃ من الفتن، الحدیث:۳۹۸۹، ج۴، ص۳۵۱)

कुछ वली पोशीदा होते हैं

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते सय्यिदुना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा **1391** हि.) इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : मेरे रोने की वजह येह है कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों की ईज़ा, रब से जंग है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया ऐसे छुपे हुवे हैं कि उन की पहचान बहुत मुश्किल है बहुत दफ़्आ़ पड़ोसियों दोस्तों से शकर रन्जी हो जाती है मुमकिन है कि उन में से कोई **वलिय्युल्लाह** हो और उन की तक्लीफ़ मेरे लिये मुसीबत बन जावे।

(مراۃ المناجیح، کتاب الرقاق، باب الریاء والسمعۃ، ج۷، ص۱۳۸)

कामिल पीर पर ए'तिराज़ के नव अस्बाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुर्शिदे कामिल के दर पर उ़म्र गुज़ारने के बा वुजूद बा'ज़ लोग इक्तिसाबे फ़ैज़ से महरूम रहते हैं, आख़िर क्यूं ? ग़ौर करने पर मा'लूम होगा कि येह लोग मुर्शिदे कामिल के अफ़्आ़ल व अक़्वाल को अ़क़्ल के तराज़ू में तोलते हैं, जब कोई बात समझ में नहीं आती तो मुर्शिद पर त़रह़ त़रह़ के ए'तिराज़ात करने लगते हैं । लिहाज़ा याद रखिये कि कामिल पीरो मुर्शिद पर ए'तिराज़ का सबब अकषर अवक़ात क़ल्बी ख़बाषत (दिल की गन्दगी) होती है मगर बसा अवक़ात कुछ ज़ाहिरी अस्बाब भी इस के मुह़र्रिक बन जाते हैं । आइये इन अस्बाब पर एक नज़र डालते हैं ताकि इन का इ़लाज कर के हम शैत़ानी वस्वसों को जड़ से उखाड़ फेंकें और आख़िरत में मुर्शिद की मह़ब्बत दिल में बसाए इन के झन्डे तले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम के नज़राने पेश करते हुवे बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर हों ।

पीर पर ए'तिराज़ का पहला सबब

बा'ज़ मुरीद काफ़ी अ़र्सा ख़िदमते मुर्शिद में गुज़ार देते हैं और जब किसी मक़ाम पर नहीं पहुंच पाते तो येह कहते सुनाई देते हैं कि उन्हों ने तो मुर्शिद की ख़िदमत का ह़क़ अदा कर दिया है फ़ैज़ देना

न देना मुर्शिद की मरज़ी है। येह नादान लोग नहीं जानते कि मुर्शिद का ह़क़ अदा करना इन के बस की बात नहीं बल्कि ऐसे वस्वसे का शिकार होना इन के लिये पीर के फ़ैज़ से महरूमी का बाइ़ष है। चुनान्चे,

क्या पीर का ह़क़ अदा हो सक्ता है ?

ह़ज़रते ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْبَاقِي से जब येह अ़र्ज़ की गई कि पीर का मुरीद पर किस क़दर ह़क़ है ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया : अगर कोई मुरीद उ़म्र भर ह़ज की राह में पीर को सर पर उठाए रखे तो भी पीर का ह़क़ अदा नहीं हो सकता (بہشت بہشت، ص۳۹۷) और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی (मुतवफ़्फ़ा 973 हि.) **अल अन्वारुल कुदसिय्यतु फ़ी मा'रिफ़ति क़वाइ़दिस्सूफ़िय्या** में इरशाद फ़रमाते हैं : मुरीद की शान येह है कि कभी उस के दिल में येह ख़याल पैदा न हो कि उस ने अपने मुर्शिद के एह़सानात का बदला चुका दिया है। अगर्चे अपने मुर्शिद की हज़ार बरस ख़िदमत करे और उस पर लाखों रूपे भी ख़र्च करे क्यूंकि जिस मुरीद के दिल में इतनी ख़िदमत और इतने ख़र्च के बा'द येह ख़याल आया कि उस ने मुर्शिद का कुछ ह़क़ अदा कर दिया है तो वोह राहे त़रीक़त से निकल जाएगा या'नी पीर के फ़ैज़ से उस का कोई तअ़ल्लुक़ बाक़ी न रहेगा। (الانوار القدسیۃ، الجزء الثانی، ص۲۷)

मा'लूम हुवा पीर की ख़िदमत बजा ला कर उसे जतलाना नहीं चाहिये क्यूंकि हम जैसों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के येह बर्गुज़ीदा बन्दे अपनी ख़िदमत के लिये क़बूल फ़रमा लें येह ही इन की मेहरबानी है। क्यूंकि उन्हें न तो हमारी ख़िदमत की ज़रूरत है और न ही हमारे मालो दौलत की कोई ह़ाजत। चुनान्चे,

पीर की मुरीद से तवक़्क़ोआ़त

ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुबारक मालिकी सिजिल्मासी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा **1155** हि.) **अल इब्रीज़** में अपने शैख़े करीम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मसऊ़द दब्बाग़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा **1132** हि.) का येह क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि कोई भी शैख़ अपने मुरीद से किसी क़िस्म की ज़ाहिरी ख़िदमत, माले दुन्या या किसी और फ़ाइदे का त़लब गार नहीं होता बल्कि उसे अपने मुरीद से सिर्फ़ येह तवक़्क़ोअ़ होती है कि उस का मुरीद हर ह़ालत में अपने शैख़ को साह़िबे कमाल, साह़िबे तौफ़ीक़, साह़िबे बसीरत, साह़िबे मा'रिफ़त और साह़िबे क़ुर्ब समझे और फिर सारी ज़िन्दगी इसी अ़क़ीदे पर क़ाइम रहे, इस सूरत में हर क़िस्म की ख़िदमत मुरीद के लिये मुफ़ीद षाबित होगी लेकिन अगर येह ख़ुश ए'तिक़ादी मौजूद न हो या अगर हो और पुख़्ता न हो तो मुरीद का दिल वस्वसों का शिकार रहेगा और इस सूरत में मुरीद कुछ भी ह़ासिल नहीं कर सकेगा। (الابریز، الباب الخامس فی ذکر التشائخ والارادۃ، الجزء الثانی، ص۷۸)

अपनी कमज़ोरी का ए'तिराफ़ कर लो

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुबारक मालिकी सिजिल्मासी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं कि एक बार मैं अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मसऊ़द दब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हमराह **बाबुल ह़दीद** के पास मौजूद था, उस वक़्त हमारे साथ ह़ज़रत का एक और मुरीद भी मौजूद था जो हम तमाम पीर भाइयों में सब से ज़ियादा ह़ज़रत की ख़िदमत किया करता। ह़ज़रत ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : क्या तुम मुझ से सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के ह़ुसूल के लिये मह़ब्बत करते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! मेरी मह़ब्बत सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये है और इस में न तो किसी क़िस्म की रियाकारी शामिल है और न ही मुझे शोहरत का ह़ुसूल मक़्सूद है। ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुबारक मालिकी सिजिल्मासी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझे उस की येह बात सुन कर बहुत ग़ुस्सा आया मगर मैं ह़ज़रत के अदब की वजह से ख़ामोश रहा। फिर ह़ज़रत ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : अगर तुम्हें पता चले कि मेरे अन्दर मौजूद तमाम अस्रार ख़त्म हो गए हैं तो क्या फिर भी तुम्हारी मह़ब्बत बाक़ी रहेगी ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! आप ने फ़रमाया : अगर लोग तुम से येह कहें कि मैं एक आ़म शख़्स की त़रह़ हूं तो क्या तब भी येह मह़ब्बत बाक़ी रहेगी ? उस ने फिर इक़रार

किया तो आप ने फ़रमाया : अगर लोग तुम्हें बताएं कि मैं ने गुनाहों का इर्तिकाब शुरूअ़ कर दिया है क्या फिर भी तुम्हारी महब्बत बाक़ी रहेगी ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां ! आप ने दरयाफ़्त किया : अगर मैं कई बरस तक मषलन 20 बरस तक गुनाहों की दलदल में ग़र्क़ रहूं तो फिर ? उस ने अ़र्ज़ की : फिर भी मेरे दिल में कोई शक व शुबा दाख़िल नहीं होगा । तो पीर साहिब ने फ़रमाया : अ़नक़रीब मैं तुम्हारा इम्तिहान लूंगा ।

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मुबारक मालिकी सिजिल्मासी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मुझ से मज़ीद सब्र न हो सका और मैं बोल ही पडा और अपने उस पीर भाई से कहा कि ऐसा मत कहो ! तुम से हरगिज़ ऐसा न हो सकेगा । बल्कि मुझे येह डर लग रहा है कहीं तुम राहे रास्त से भटक न जाओ क्यूंकि एक अन्धा शख़्स किसी दाना व बीना को कैसे इम्तिहान दे सकता है ? लिहाज़ा तुम पीर साहिब से मुआ़फ़ी मांग लो और अपनी आ़जिज़ी और कमज़ोरी का ए'तिराफ़ कर लो, चलो मैं भी तुम्हारे साथ मुआ़फ़ी मांगता हूं । फिर हम दोनों ने हज़रत से मुआ़फ़ी मांगी लेकिन तक़्दीर का लिखा पूरा हो कर रहा । कुछ अ़र्से बा'द शैख़ ने उसी मुरीद को एक काम कहा जो ब ज़ाहिर उसे पसन्द न था लेकिन हक़ीक़त में उस के लिये फ़ाइदे मन्द था । मगर वोह उस की हिक्मत न जान सका और उस ने नापसन्द जानते हुवे वोह काम न किया यहां तक कि वोह हज़रत के मुतअ़ल्लिक़ बद गुमानी का शिकार हो कर बिल आख़िर सोहबते शैख़ से महरूम हो गया ।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि अस्रारे इलाही को वोही शख़्स बरदाश्त कर सकता है जो परहेज़गार हो, उस का अ़क़ीदा दुरुस्त और अ़ज़्म पुख़्ता हो। अपने पीर के इ़लावा किसी की बात पर यक़ीन न करे बल्कि दीगर तमाम लोगों की हैषिय्यत उस की नज़र में मुर्दों की मानिन्द हो। (الابریز، الباب الخامس فی ذکر التشائخ والارادۃ، الجزء الثانی، ص۷۸)

पीर पर ए'तिराज़ का दूसरा सबब

बा'ज़ अवक़ात कोई मुरीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलियाए कामिलीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن बिल ख़ुसूस अपने पीरो मुर्शिद की ख़िदमत गुज़ारी व रिज़ा के सबब किसी मन्सब पर फ़ाइज़ हो जाता है तो उसे पीर का एह़सान मानने के बजाए अपनी मेह़नत व ख़िदमत का सिला समझते हुवे फ़ख़्र व ग़ुरूर में मुब्तला हो जाता है और समझता है कि अब उसे मज़ीद ख़िदमत बजा लाने की ज़रूरत नहीं इस का मक़्सूद ह़ासिल हो चुका है। पस यूं अपने पीर की बे अदबी या गुस्ताख़ी का ख़याल उस के दिल में जड़ पकड़ने लगता है और वोह येह भी भूल जाता है कि आज जिस मक़ाम पर फ़ाइज़ है वोह सब पीरो मुर्शिद की निगाहे फ़ैज़े अषर का सदक़ा है और उस का शैख़ उस के दिल की बदलती हर कैफ़िय्यत से आगाह है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन वफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा **801** हि.) फ़रमाते हैं कि जिस मुरीद ने येह गुमान किया कि उस का शैख़ उस के दिल की बदलती कैफ़िय्यात और अस्रार से वाक़िफ़ नहीं वोह अपने शैख़ के फ़ैज़ से महरूम हो जाता है ख़्वाह रात दिन मुर्शिद के साथ ही रहे। (الانوار القدسیۃ فی معرفۃ قوائد الصوفیۃ، الجزء الثانی، ص۳۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हमें कभी अपना माज़ी नहीं भूलना चाहिये और येह याद रखना चाहिये कि अपने पीर की बारगाह में आने से पहले हम सर से पाउं तक गुनाहों में ग़र्क़ थे, मुर्शिद की नज़र ने हमें गुनाहों के इस रेगिस्तान से निकाल कर नेकियों के गुलिस्तान में पहुंचाया है। हमारी नेकियों के चराग़ गुनाहों की तेज़ आंधियों में बुझ चुके थे मगर मुर्शिद के रूहानी तसर्रुफ़ ने उन बुझे हुवे चराग़ों को फिर से रोशन कर दिया। लिहाज़ा याद रखिये कि जब मुरीद अपना माज़ी भुला दे तो उस का उ़रूज और कमाल ज़वाल में बदल जाता है। चुनान्चे,

पीर का इम्तिहान लेने वाले का अन्जाम

ह़ज़रते दाता गंज बख़्श सय्यिद अ़ली हजवेरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی का एक मुरीद कुछ बद ए'तिक़ाद हो गया और समझा कि उसे भी मक़ामे मा'रिफ़त ह़ासिल हो गया है अब उसे मुर्शिद की ज़रूरत नहीं रही। लिहाज़ा वोह ख़ामोशी से ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی की बारगाह से मुंह मोड़ कर चला गया। फिर एक दिन येह देखने व आज़माने आया कि क्या ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی उस के दिल के ख़यालात से आगाह हैं या नहीं ? इधर ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی ने भी अपने नूरे फ़िरासत से उस की ह़ालत मुलाह़ज़ा फ़रमा ली। चुनान्चे,

जब वोह मुरीद आया और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से एक सुवाल पूछा तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इरशाद फ़रमाया : कैसा जवाब चाहता है, लफ़्ज़ों में या मा'नों में ? बोला : दोनों त़रह़। तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : अगर लफ़्ज़ों में जवाब चाहता है तो सुन ! अगर मुझे आज़माने से पहले खुद को आज़मा और परख लेता तो तुझे मुझे आज़माने की ज़रूरत पेश न आती और न ही तू यहां मुझे आज़माने व परखने आता। और मा'नवी जवाब येह है कि मैं ने तुझे मन्सबे विलायत से मा'ज़ूल किया। येह फ़रमाना था कि उस मुरीद का चेहरा सियाह हो गया तो आहो ज़ारी करने लगा और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : हुज़ूर यक़ीन की राह़त मेरे दिल से जाती रही है। फिर तौबा की और फ़ुज़ूल बातों पर भी नदामत का इज़्हार किया तो ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने इरशाद फ़रमाया : तू नहीं जानता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली वालियाने अस्रारे इलाही होते हैं, तुझ में उन की ज़र्ब की बरदाश्त नहीं। (کشف المحجوب، ص۱۳۷)

मा'लूम हुवा मुरीद को पीर का इम्तिह़ान लेने के मुतअ़ल्लिक़ कभी नहीं सोचना चाहिये वरना रह़मते खुदावन्दी से मह़रूम होना पड़ेगा। नीज़ किसी मक़ाम व मन्सब के हुसूल पर येह भी याद रखना चाहिये कि येह सब मेरे पीर की अ़त़ा है, क्यूंकि जो मुरीद किसी ने'मत को अपने पीर की अ़त़ा नहीं समझते अकषर शैत़ान के हाथों उन का अन्जाम बुरा होता है। चुनान्चे,

और जन्नत ग़ाइब हो गई

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى के एक मुरीद को येह सूझी कि मैं कामिल हो गया हूं और अब मुझे पीर की सोह़बत व ख़िदमत में रहने की कोई ह़ाजत नहीं रही बल्कि मेरे लिये अकेला रहना बेहतर है। पस वोह गोशा नशीन हो गया और ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर होना छोड़ दिया। एक रात उस ने देखा कि कुछ लोग एक ऊंट ले कर आए हैं और उस से कह रहे हैं कि वोह उसे लेने आए हैं ताकि वोह येह रात जन्नत में गुज़ारे। चुनान्चे, वोह लोग उसे ऊंट पर सुवार कर के ले गए यहां तक कि एक ऐसी जगह पहुंचे जो बहुत ख़ूब सूरत थी, वहां की हर हर शै से हुस्न टपक रहा था, नफ़ीस ख़ानों के साथ साथ मीठे पानी के चश्मे भी रवां थे। वोह सुब्ह़ तक वहां के मज़े लेता रहा और जब सुब्ह़ हुई तो उस ने ख़ुद को अपने ह़ुजरे में पाया। येह सिलसिला इसी त़रह़ कई रोज़ तक जारी रहा कि उसे हर रात ऐसे दिखाई देता कि फ़िरिश्ते उसे सुवारी पर बिठा कर जन्नत की सैर कराते और त़रह़ त़रह़ के मेवे खिलाते हैं यहां तक कि वोह तकब्बुर व ग़ुरूर का शिकार हो गया और येह दा'वा करने लगा कि उस की ह़ालत उस कमाल तक पहुंच चुकी

है कि उस की रातें भी जन्नत में गुज़रती हैं। लोगों ने उस की ख़बर ह़ज़रते जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى को दी तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस के पास गए तो देखा कि वोह बड़े ठाठ से तकब्बुर में अकड़ा बैठा है। आप ने उस से कैफ़िय्यत पूछी तो उस ने बड़े फ़ख़्र से अपने बुलन्द मक़ाम और जन्नत की सैर का ज़िक्र किया। चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : आज जब जन्नत में जाओ तो तीन मरतबा لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه पढ़ना। उस ने कहा : बहुत अच्छा। चुनान्चे, ह़स्बे मा'मूल जब वोह जन्नत में पहुंचा तो याद आने पर महज़ तजरिबे के त़ौर पर उस ने तीन बार لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه पढ़ा। तो उसे ले जाने वाले तमाम लोग चीख़ मार कर भाग गए और वोह क्या देखता है कि जन्नत आने वाह़िद में उस की आंखों से ग़ाइब हो गई है और वोह नजासत और कूड़ा करकट वाली जगह पर बैठा हुवा है और उस के चारों त़रफ़ मुर्दार हड्डियां पड़ी हैं। उसी वक़्त उस ने जान लिया कि येह एक शैत़ानी जाल था और मैं इस जाल में गिरिफ़्तार था। फ़ौरन तौबा की और अपने पीरो मुर्शिद सय्यिदुत्ताइफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया।

(کشف المحجوب، باب آدابہم فی الصحبۃ، ص ۳۷۷)

इस हि़कायत से येह अहम राज़ आश्कार हुवा कि मुर्शिद की तवज्जोह से ह़ासिल होने वाले मक़ाम को पा कर भी मुरीद हर वक़्त बारगाहे मुर्शिद से वाबस्ता रहे। वरना अ़त़ाए मुर्शिद को अपना कमाल समझने वाला मुरीद तबाही के दर पे दस्तक देगा।

पीर पर ए'तिराज़ का तीसरा सबब

बसा अवक़ात शैख़े त़रीक़त से कुछ ऐसी बातें सादिर होती हैं जो ब ज़ाहिर ख़िलाफ़े सुन्नत मा'लूम होती हैं तो शैत़ान जो ऐसे ही किसी मौक़अ़ का मुन्तज़िर रहता है, फ़ौरन मुरीद के दिल में वस्वसे का बीज बोने की कोशिश करता है लिहाज़ा अगर मुरीदे सादिक़ के पाउं ऐसे मवाक़ेअ़ पर लड़ खड़ा जाएं और वोह पीर के मुतअ़ल्लिक़ बद गुमानी का शिकार हो जाए तो पीर पर ए'तिराज़ का मुर्तकिब हो जाता है, और याद रखिये कि येह भी पीर के फ़ैज़ से महरूमी की अ़लामत है। चुनान्चे,

क्या कुश्ती लड़ने वाला भी पीर हो सकता है ?

ख़्वाजए नक़्शबन्द ह़ज़रते सय्यिदुना बहाउल ह़क़ वद्दीन عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ المَتِين ने उ़लूमे शरइ़य्या की तक्मील के बा'द राहे त़रीक़त के किसी शाह सुवार की ख़िदमत में ज़ानूए तलम्मुज़ तह करने का इरादा किया तो बुख़ारा में ह़ज़रते अमीर कलाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का शोहरा सुन कर उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे। क्या देखते हैं कि उस वक़्त

मकान के अन्दर ख़ास लोगों का मज्मअ़ है, अखाड़े में कुश्ती हो रही है, ह़ज़रत भी तशरीफ़ फ़रमा हैं और कुश्ती में शरीक हैं। ह़ज़रत ख़्वाजा नक़्शबन्द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पाबन्दे शरीअ़त आ़लिमे जलील थे, आप को येह बात कुछ नागवार गुज़री ह़ालांकि येह कोई नाजाइज़ बात न थी। दिल में इस ख़याले वस्वसा का आना था कि फ़ौरन ग़ुनूदगी छा गई, देखा कि मा'रिकए ह़श्र बपा है, उन के और जन्नत के दरमियान एक दलदल ह़ाइल है। येह उस पार जाने के लिये दलदल में उतरे मगर फंस गए, अब जितना ज़ोर करते धंसते जाते, यहां तक कि बग़लों तक धंस गए, अब निहायत परेशान कि क्या किया जाए, इतने में देखा कि ह़ज़रते अमीर कलाल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ तशरीफ़ लाए और एक हाथ से निकाल कर दरया के उस पार कर दिया। इतने में आप की आंख खुल गई। इस से पहले कि येह कुछ अ़र्ज़ करें, ह़ज़रते अमीर कलाल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : हम अगर कुश्ती न लड़ें तो येह ता़क़त कहां से आए। येह सुन कर फ़ौरन क़दमों पर गिर पड़े और बैअ़त हो गए। (جامع کرامات اولیاء، السید امیر کلال، باب الالف، ج۱، ص۶۰۱، ملخصًا)

मुरीद के लिये ज़ह्रे क़ातिल

शैख़ुश्शुयूख़ ह़ज़रते सय्यिदुना शहाबुद्दीन सोहरवर्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی **अ़वारिफ़ुल मआ़रिफ़** शरीफ़ में फ़रमाते हैं : **पीरों पर ए'तिराज़ करने से डरना चाहिये कि येह मुरीदों के लिये ज़ह्रे**

क़ातिल है। कम कोई मुरीद होगा जो अपने दिल में शैख़ पर कोई ए'तिराज़ करे फिर फ़लाह़ पाए। शैख़ के तसर्रुफ़ात से जो कुछ उसे सह़ीह़ न मा'लूम होते हों उन में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام के साथ पेश आने वाले वाक़िआ़त याद कर ले क्यूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَیْہِ السَّلَام से वोह बातें सादिर होती थीं बज़ाहिर जिन पर सख़्त ए'तिराज़ था (जैसे मिस्कीनों की किश्ती में सूराख़ कर देना, बच्चे को क़त्ल कर देना) फिर जब वोह उस की वजह बताते थे, ज़ाहिर हो जाता था कि ह़क़ येही था जो उन्हों ने किया। यूंही मुरीद को यक़ीन रखना चाहिये कि शैख़ का जो फ़े'ल मुझे सह़ीह़ मा'लूम नहीं होता शैख़ के पास उस की सिह़्ह़त पर दलीले क़त़ई है। (عوارف المعارف، الباب الثانی عشر فی شرح خرقۃ المشائخ، ص ۶۲)

पीर भी आख़िर इन्सान है

शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अगर पीर में कोई हल्की सी ख़िलाफ़े शरीअ़त बात कभी देख ले तो फ़ौरन ए'तिक़ाद ख़राब न करे और येह समझ ले कि पीर भी आदमी ही है कोई फ़िरिश्ता तो है नहीं। इस लिये अगर उस से इत्तिफ़ाक़िय्या कोई मा'मूली सी ख़िलाफ़े शरअ़ बात हो गई है जो तौबा कर लेने से मुआ़फ़ हो सकती है तो ऐसी बात

पर बदज़न हो कर पीर को न छोड़े हां अलबत्ता अगर पीर बद अ़क़ीदा हो जाए या किसी गुनाहे कबीरा पर अड़ा रहे तो फिर मुरीदी तोड़ दे क्यूंकि बद अ़क़ीदा और फ़ासिक़े मो'लिन को अपना पीर बनाना ह़राम है। (जन्नती ज़ेवर, स. 462)

ख़िलाफ़े सुन्नत बात देख कर शैख़ से फिरना कैसा ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **अल मलफ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** (मुकम्मल चार ह़िस्से) सफ़ह़ा 498 पर है कि जब आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई कि शैख़ (या'नी अपने पीर) से बज़ाहिर कोई ऐसी बात मा'लूम हो जो ख़िलाफ़े सुन्नत है तो इस से फिरना कैसा ? तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : मह़रूमी और इन्तिहाई गुमराही है। (मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 498)

ह़ाफ़िज़ुल ह़दीष सय्यिदी अह़मद सिजिल्मासी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 1155 हि.) **अल इब्रीज़** में अपने शैख़े करीम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मसऊ़द दब्बाग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 1132 हि.) का येह क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि मुरीद की अपने पीर से सच्ची मह़ब्बत की अ़लामत येह है कि मुरीद अपने पीर को अ़क़्ल के तराज़ू में तोलना छोड़ दे यहां तक कि उसे अपने पीर के तमाम अफ़्आ़ल, अक़्वाल और अह़वाल बिल्कुल दुरुस्त दिखाई देते हों, अगर कोई बात समझ में आ जाए तो ठीक, वरना उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

के सिपुर्द कर दे मगर इस बात का यक़ीन रखे कि पीर का अ़मल दुरुस्त ही है। लेकिन अगर उसे पीर का कोई फ़े'ल बज़ाहिर ग़लत मा'लूम हो और दिल में ख़याल करे कि पीर साहिब ग़लती पर हैं तो ऐसा शख़्स पल भर में सर के बल गिर जाता है और अपने दा'वए इरादत में झूटा षाबित होता है। (الابریز، الباب الخامس فی ذکر التشائخ والارادۃ، الجزء الثانی، ص۷۷)

पीर मा'सूम नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی से अ़र्ज़ की गई : क्या आ़रिफ़ गुनाह कर सकता है ? तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का काम मुक़र्रर तक़्दीर है। लिहाज़ा मुरीद को चाहिये कि वोह शैख़ की सोह़बत इख़्तियार करते वक़्त उसे गुनाहों से मा'सूम न समझे (कि येह अम्बिया व मलाइका عَلَیْہِمُ السَّلَام का ख़ास्सा है) बल्कि मह़्ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रास्ते का इ़ल्म ह़ासिल करने के लिये सोह़बत इख़्तियार करे और उस के अक़्वाल व अह़काम में नज़र करे न कि उस के अफ़्आ़ल में और इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह हुक्म तो इरशाद फ़रमाया : فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ (پ۱۴، النحل:۴۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो। मगर हमें येह हुक्म नहीं फ़रमाया कि उन के अफ़्आ़ल की पैरवी करो क्यूंकि वोह गुनाहों से मा'सूम नहीं और चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام को गुनाहों से मा'सूम बनाया है, इस लिये इन के तअ़ल्लुक़ से इरशाद फ़रमाता है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۸،الممتحنۃ:۶)	*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे लिये उन में अच्छी पैरवी थी।*
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱،الاحزاب:۲۱)	*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।*

पस हम **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम अफ़्आ़ल की पैरवी करेंगे सिवाए उन अफ़्आ़ल के जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ ख़ा़स हैं। हमें उन पर अ़मल करना जाइज़ नहीं और जान लीजिये ! येह बात (कि जो फ़े'ल किसी के साथ ख़ा़स हो ग़ैर को उस पर अ़मल जाइज़ नहीं) इस बीमारी के लिये सब से बड़ी दवा है जो मुरीद को शैता़न की त़रफ़ से लगती है और इस में कोई शक भी नहीं कि ख़बीष नफ़्स जब शैख़ को इस क़िस्म के अलक़ा पर अ़मल करता देखता है तो फ़ौरन उस पर अ़मल करता है (ह़ालांकि वोह शैख़ के साथ ख़ा़स है) और नफ़्स त़बई तौ़र पर किसी का मह़कूम बन कर नहीं रहना चाहता। पस जब शैता़न शैख़ के बारे में कोई घटया ख़याल दिल में डालता है तो अपनी हलाकत के लिये इसे क़बूल कर लेता है सिवाए येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (इस्लाहे़ आ'माल जि.1 स.599)

पीर पर ए'तिराज़ का चौथा सबब

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

फ़रमाते हैं : क्या वजह है कि मुरीद आ़लिमे फ़ाज़िल और साहि़बे शरीअ़तो त़रीक़त होने के बा वुजूद (अपने मुर्शिदे कामिल के फ़ैज़ से) दामन नहीं भर पाता ? ग़ालिबन इस की वजह येह है कि मदारिस से फ़ारिग़ अकषर उ़-लमाए दीन अपने आप को पीरो मुर्शिद से अफ़्ज़ल समझते हैं या अ़मल का ग़ुरूर और कुछ होने की समझ कहीं का नहीं रहने देती । वगरना ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى का मश्वरा सुनें । चुनान्चे, ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : लेने वाले को चाहिये कि जब किसी चीज़ के ह़ासिल करने का इरादा करे तो अगर्चे कमालात से भरा हुवा हो मगर कमालात को दरवाज़े पर ही छोड़ दे (या'नी आ़जिज़ी इख़्तियार करे) और येह जाने कि मैं कुछ जानता ही नहीं । ख़ाली हो कर आएगा तो कुछ पाएगा और जो अपने आप को भरा हुवा समझेगा तो याद रहे कि भरे बरतन में कोई और चीज़ नहीं डाली जा सकती ।

(अन्वारे रज़ा, इमाम अह़मद रज़ा और ता'लीमाते तसव्वुफ़, स. 242)

इ़ल्म की आफ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बद क़िस्मती से बा'ज़ लोग इस ख़ुश फ़हमी का शिकार हो जाते हैं कि इन से बढ़ कर कोई दूसरा नहीं । दर अस्ल ऐसे लोग ग़ुरूर व तकब्बुर में येह भूल जाते हैं कि اٰفَةُ الْعِلْمِ الْخُيَلَاءُ या'नी इ़ल्म की आफ़त तकब्बुर है । और फिर येह लोग अपने इ़ल्म पर नाज़ करते हुवे मशाइख़े इ़ज़्ज़ाम पर बे जा

तन्क़ीद और ए'तिराज़ात करते नज़र आते हैं। ऐसों की आख़िरत तो बरबाद होती ही है मगर बसा अवक़ात इन्हें दुन्या में भी निशाने इ़ब्रत बना दिया जाता है। इस ज़िम्न में एक इ़ब्रत अंगेज़ ह़िकायत पेशे ख़िदमत है।

बा अदब बा नसीब, बे अदब बे नसीब

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **146** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया** के सफ़ह़ा **66** पर है, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद **अ़ब्दुल्लाह** मुह़म्मद बिन **हबतुल्लाह** तमीमी शाफ़ेई عَلَيْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान फ़रमाते हैं कि मैं भरी जवानी में इ़ल्मे दीन के ह़ुसूल के लिये बग़दाद शरीफ़ ह़ाज़िर हुवा। उन दिनों मद्रसए निज़ामिय्या में **इब्ने सक़ा** मेरा रफ़ीक़ व हम सबक़ था। हमारी येह आ़दत थी कि इ़बादत के साथ साथ सालिह़ीन की ज़ियारत करने भी जाया करते थे। उन्हीं अय्याम की बात है, बग़दादे मुअ़ल्ला में **ग़ौष** नाम से मश्हूर एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रहा करते थे। उन की निस्बत कहा जाता था कि वोह जब चाहते हैं ज़ाहिर हो जाते हैं और जब चाहते हैं ग़ाइब हो जाते हैं। एक दिन मैं, इब्ने सक़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (ग़ौषे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم) जो कि उन दिनों जवान थे, उन बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ियारत के इरादे से निकले। रास्ते में **इब्ने सक़ा** कहने लगा कि "मैं उन से ऐसा मस्अला पूछूंगा जिस का वोह जवाब

न दे सकेंगे।" मैं ने कहा कि "मैं भी एक मस्अला पूछूंगा, देखूंगा कि वोह क्या जवाब देते हैं।" तो ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह ! मैं तो उन से कोई सुवाल नहीं करूंगा बल्कि उन की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उन की ज़ियारत की बरकतें लूटूंगा।"

पस जब हम वहां पहुंचे तो उन्हें अपनी जगह मौजूद न पाया। अभी हम कुछ देर ही ठहरे थे तो क्या देखा कि वोह वहीं तशरीफ़ फ़रमा हैं। फिर उन्हों ने **इब्ने सक़ा** की त़रफ़ ग़ुस्से से देख कर फ़रमाया : "ऐ इब्ने सक़ा ! तेरी हलाकत हो ! तू मुझ से ऐसा मस्अला पूछने आया है जिस का मुझे जवाब नहीं आएगा ? सुन ! वोह मस्अला येह है और इस का जवाब येह है। बेशक मैं तेरे अन्दर कुफ़्र की आग भड़कते हुवे देख रहा हूं।" फिर उन्हों ने मेरी त़रफ़ देख कर फ़रमाया : "ऐ **अ़ब्दुल्लाह** ! तुम मुझ से ऐसा मस्अला पूछने आए हो ताकि देखो कि मैं उस का क्या जवाब देता हूं। सुनो ! वोह मस्अला येह है और उस का जवाब येह हैं। और तुम्हारी बे अदबी की वजह से दुन्या तुम्हारे कानों की लौ तक पहुंचेगी।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی की त़रफ़ नज़र फ़रमाई। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपने क़रीब कर लिया और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ता'ज़ीमो तकरीम की और इरशाद फ़रमाया : **ऐ अ़ब्दल क़ादिर** ! आप ने अपने अदब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व

रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को राज़ी किया है। गोया कि मैं देख रहा हूं कि आप बग़दाद शरीफ़ में मिम्बर पर बैठे लोगों से फ़रमा रहे हैं : قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰى رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه या'नी मेरा येह क़दम हर वली की गर्दन पर है। और मैं आप के ज़माने के औलियाए इ़ज़्ज़ाम को भी देख रहा हूं कि उन्हों ने आप की ता'ज़ीम की ख़ातिर अपनी गर्दनों को झुका दिया है। येह फ़रमा कर वोह बुज़ुर्ग उसी वक़्त ग़ाइब हो गए। इस के बा'द हम ने उन्हें न देखा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद **अ़ब्दुल्लाह** शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی का ह़ाल येह हुवा की बारगाहे इलाही में जो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का क़ुर्ब था उस की निशानी व अ़लामत ज़ाहिर हुई और अ़वाम व ख़वास (या'नी मशाइख़, औलिया, उ़-लमा और आ़म लोग) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह से फ़ैज़याब होने लगे और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह ए'लान भी फ़रमाया : قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰى رَقَبَةِ كُلِّ وَلِیِّ اللّٰه या'नी मेरा येह क़दम हर वली की गर्दन पर है। और ज़माने के तमाम औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इस फ़ज़ीलत का इक़रार किया। और इब्ने सक़ा का ह़ाल येह हुवा कि उ़लूमे शरइ़य्या के ह़ुसूल में लगा रहा यहां तक कि इन ज़ाहिरी उ़लूम में बे इन्तिहा माहिर हो गया और अपने ज़माने के बहुत से माहिरीन पर फ़ाइक़ हो गया, वोह ग़ज़ब का फ़सीह़ो बलीग़ था कि हर इ़ल्म में अपने मद्दे मुक़ाबिल मुनाज़िर को ज़ेर कर लेता था। जब उस की बहुत ज़ियादा शोहरत हुई

तो बादशाहे वक़्त ने उसे अपना मुक़र्रब बना लिया और उसे मुल्के रूम के बादशाह की त़रफ़ भेजा। पस जब शाहे रूम ने उस की कई उ़लूम में महारत और फ़साह़तो बलाग़त देखी तो बड़ा ह़ैरान और मुतअ़ज्जिब हुवा। चुनान्चे, बादशाह ने उस के साथ मुनाज़रे के लिये ईसाइयों के बड़े बड़े अहले इ़ल्म और पादरियों को जम्अ़ किया। उन्हों ने **इब्ने सक़ा** से मुनाज़रा किया तो उस ने तमाम को आ़जिज़ व बेबस कर दिया। यूं उसे शाहे रूम के दरबार में बहुत इ़ज़्ज़त व पज़ीराई ह़ासिल हुई। फिर एक दिन उस की नज़र बादशाह की लड़की पर पड़ी तो वोह उस पर फ़रेफ़ता हो गया और बादशाह से दरख़्वास्त की, कि "आप अपनी लड़की का निकाह़ मेरे साथ कर दें।" बादशाह ने कहा : "अगर तुम ईसाई मज़हब इख़्तियार कर लो तो निकाह़ कर दूंगा।" (نَعُوْذُبِاللّٰہِ مِنْ ذَالِک) **इब्ने सक़ा** ने ईसाई मज़हब क़बूल कर लिया और बादशाह ने अपनी लड़की का निकाह़ उस के साथ कर दिया। उस वक़्त **इब्ने सक़ा** को उस ग़ौष رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बात याद आई तो उस ने जान लिया कि येह मुसीबत उसी बे अदबी के सबब है। और मेरा (या'नी इस ह़िकायत के रावी ह़ज़रते अबू सईद अ़ब्दुल्लाह शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی का) ह़ाल येह हुवा कि मैं दिमश्क़ चला आया। जहां सुल्त़ान नूरुद्दीन मलिक शहीद ने मुझे बुला कर अवक़ाफ़ की वज़ारत क़बूल करने पर मजबूर किया तो मैं ने वज़ारत क़बूल कर ली और मेरे पास दुन्या (या'नी मालो दौलत)

इस क़दर ज़ियादा आई कि मैं ने महसूस किया दुन्या मेरे कानों की लौ तक पहुंच गई है। और इस त़रह़ उन गौष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का कलाम हम तीनों के बारे में सच षाबित हुवा।

(بہجۃ الاسرار و معدن الانوار، ذکر اخبار المشائخ عنہ بذالک، ص ۱۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ज़ब हो गया क्या अब भी मशाइख़े इ़ज़्ज़ाम पर बेजा ए'तिराज़ करने वाले अपनी ज़बानों को लगाम नहीं देंगे ? याद रखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इन नेक बन्दों की ग़ुलामी में नजात और इन से दूरी में मौत है, लिहाज़ा ऐसे लोगों को इस बात से डरना चाहिये कि कहीं येह भी इब्ने सक़ा की त़रह़ दुन्या वालों के लिये निशाने इ़ब्रत न बन जाएं और कभी भूल कर दिल में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बर गुज़ीदा व नेक बन्दों पर ए'तिराज़ न करें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के येह नेक बन्दे दिलों में पैदा होने वाले ख़यालात से भी आगाह होते हैं। चुनान्चे,

तुम ने ज़बान सीधी की है हम ने दिल

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **561** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** (मुकम्मल चार ह़िस्से) सफ़ह़ा **479** पर है : एक साह़िब औलियाए किराम में से थे। इन की ख़िदमत में दो आ़लिम ह़ाज़िर हुवे। आप के पीछे नमाज़ पढ़ी, तजवीद के बा'ज़ **क़वाइदे मुस्तह़ब्बा** अदा न हुवे। उन के दिल में

ख़त़रा गुज़रा कि अच्छे वली हैं इन को तजवीद भी नहीं आती ! उस वक़्त तो ह़ज़रत ने कुछ न फ़रमाया। मकान के सामने एक नह्र जारी थी, येह दोनों साह़िब नहाने के वासित़े वहां गए, कपड़े उतार कर किनारे पर रख दिये और नहाने लगे। इतने में एक नियाहत मुहीब (या'नी ख़ौफ़नाक) शेर आया और सब कपड़े जम्अ़ कर के उन पर बैठ गया। येह दोनों साह़िब ज़रा ज़रा सी लंगोटियां बांधे हुवे, अब निकलें तो कैसे ? उ़-लमा की शान के बिल्कुल ख़िलाफ़। जब बहुत देर हो गई (तो) ह़ज़रत ने फ़रमाया कि भाइयो ! हमारे दो मेहमान सवेरे आए थे, वोह कहां गए ? किसी ने कहा : हुज़ूर ! वोह तो इस मुश्किल में हैं। तशरीफ़ ले गए और शेर का कान पकड़ कर एक तमांचा मारा उस ने दूसरी त़रफ़ मुंह फेर लिया, आप ने उस त़रफ़ मारा उस ने इस त़रफ़ मुंह फेर लिया। फ़रमाया : हम ने नहीं कहा था कि हमारे मेहमानों को न सताना, जा चला जा ! शेर उठ कर चला गया। फिर उन साह़िबों से फ़रमाया : तुम ने ज़बानें सीधी की हैं और हम ने क़ल्ब सीधा किया। येह उन के **ख़तरे का जवाब** था।

(رسالہ قشیریہ، باب کرامات الاولیاء، ص ۳۸۷، ملخّصًا)

पीर पर ए'तिराज़ का पांचवां सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात मुरीद अपने पीर की मह़ब्बत में इस क़दर बढ़ जाते हैं कि ख़ुद अपने ही पीर पर ए'तिराज़ का सबब बन जाते हैं। जैसा कि सरकारे वाला तबार, हम

बे कसों के मददगार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमी का अपने वालिदैन को गालियां देना कबीरा गुनाहों में से है। अ़र्ज़ की गई : क्या कोई शख़्स अपने वालिदैन को भी गालियां दे सकता है? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां ! जब आदमी किसी शख़्स के वालिदैन को गालियां देता है तो वोह जवाब में उस के वालिदैन को गालियां देता है।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الکبائر واکبرھا، الحدیث:۹۰، ص۶۰)

दूसरों के पीरों पर भी ए'तिराज़ न कीजिये

जब कोई मुरीद अपने पीर की महब्बत में किसी दूसरे पीर के मुरीद से किसी बात पर उलझ कर उस के पीर पर बेजा ए'तिराज़ात करता है तो वोह मुरीद अपने पीर की महब्बत में उसे नीचा दिखाने की कोशिश में उस के पीर पर बेजा ए'तिराज़ात करने लगता है और यूं मशाइख़े इ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी का दरवाज़ा खुल जाता है जिस का सबब वोह शख़्स बनता है जो किसी सूरत में दुरुस्त नहीं क्यूंकि जिस त़रह़ उस का पीर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक बरगुज़ीदा बन्दा है इसी त़रह़ दूसरे मशाइख़ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे हैं लिहाज़ा उन में से किसी को बुरा भला कहना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दुश्मनी मौल लेना है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया कि जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के किसी वली से दुश्मनी की उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ए'लाने जंग किया। (ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب من ترجی لہ السلامۃ من الفتن، الحدیث:۳۹۸۹، ج۴، ص۳۵۱)

शैखुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस्लामी मसाइल व ख़साइल के ख़ज़ाने पर मुश्तमिल अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब **जन्नती ज़ेवर** में फ़रमाते हैं : हर मुरीद पर लाज़िम है कि दूसरे बुज़ुर्गों या दूसरे सिलसिले की शान में हरगिज़ हरगिज़ कभी कोई गुस्ताख़ी और बे अदबी न करे, न किसी दूसरे पीर के मुरीदों के सामने कभी येह कहे कि मेरा पीर तुम्हारे पीर से अच्छा है या हमारा सिलसिला तुम्हारे सिलसिले से बेहतर है, न येह कहे कि हमारे पीर के मुरीद तुम्हारे पीर से ज़ियादा हैं या हमारे पीर का ख़ानदान तुम्हारे पीर के ख़ानदान से बढ़ चढ़ कर है। क्यूंकि इस क़िस्म की फ़ुज़ूल बातों से दिल में अन्धेरा पैदा होता है और फ़ख़्र व ग़ुरूर का शैत़ान सर पर सुवार हो कर मुरीद को जहन्नम के गढ़े में गिरा देता है और पीरों व मुरीदों के दरमियान निफ़ाक़ व शिक़ाक़, पार्टी बन्दी और क़िस्म क़िस्म के झगड़ों का और फ़ितना व फ़साद का बाज़ार गर्म हो जाता है। (जन्नती ज़ेवर, स. **464**)

पीर पर ए'तिराज़ का छटा सबब

बा'ज़ अवक़ात पीर के बताए हुवे वज़ीफ़े या ज़िक्र की वजह से मुरीद के क़ल्ब की कैफ़िय्यत नहीं बदलती तो वोह अपने पीर से बदज़न होने लगता है, लिहाज़ा ऐसे मुरीदों को नसीह़त करते हुवे शैखुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इरशाद फ़रमाते हैं : अगर पीर के बताए हुवे वज़ीफ़े या ज़िक्र का कुछ

मुद्दत तक कोई अषर या कैफ़िय्यत ज़ाहिर न हो तो इस से तंग दिल और पीर से बदज़न न हो और इस को अपनी ख़ामी या कोताही समझे और यूं समझे कि बड़ा अषर येही है कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेने की तौफ़ीक़ (ह़ासिल) हो रही है हर मुरीद में पैदाइशी तौ़र पर अलग अलग सलाह़िय्यत हुवा करती है एक ही वज़ीफ़ा और एक ही ज़िक्र से किसी में कोई अषर पैदा होता है और किसी में कोई दूसरी कैफ़िय्यत पैदा होती है किसी में जल्द अषर ज़ाहिर होता है और किसी में बहुत देर के बा'द अषरात ज़ाहिर होते हैं जिस में जैसी और जितनी सलाह़िय्यत होती है इसी लिह़ाज़ से वज़ीफ़ों और ज़िक्र की कैफ़िय्यात पैदा होती हैं येह ज़रूरी नहीं कि हर मुरीद का ह़ाल यक्सां ही हो। बहर ह़ाल अगर वज़ीफ़ा व ज़िक्र से कुछ कैफ़िय्यात पैदा हों तो ख़ुदा का शुक्र अदा करे और अगर कुछ अषरात न हों या कम हों या अषरात हो कर कम हो जाएं या बिल्कुल अषरात व कैफ़िय्यात ज़ाइल हो जाएं तो हरगिज़ हरगिज़ पीर से बद ए'तिक़ाद हो कर ज़िक्र और वज़ीफ़े को न छोड़े बल्कि बराबर पढ़ता रहे और पीर का अदबो एह़तिराम ब दस्तूर रखे और ज़रा भी तंग दिल न हो और येह सोच सोच कर सब्र करे और अपने दिल को तसल्ली देता रहे कि

उस के अल्त़ाफ़ तो हैं आ़म शहीदी सब पर
तुझ से क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता

(जन्नती ज़ेवर, स. **463**)

पीर तो देता है हम नहीं लेते

मा'लूम हुवा कि पीर के फ़ैज़ में कमी नहीं बल्कि उस का फ़ैज़ तो बहते दरया की त़रह़ रास्ते में आने वाली हर क़िस्म की ज़मीन को सैराब करने वाला है। मगर येह हमारी बद क़िस्मती है कि हम पीर के फ़ैज़ान को अपने दिल की खेती में मह़ब्बत व ख़ुलूस से दाख़िल ही नहीं होने देते। जैसा कि तफ़्सीरे रूहुल बयान में है कि मुर्शिद के दिल में अपने मुरीद की कामयाबी की ख़्वाहिश जोश पर होती है लेकिन फिर भी मुरीद के मह़रूम रह जाने का सबब येह है कि वोह मुख़्लिस नहीं होता और इक्तिसाबे फ़ैज़ करना ही नहीं चाहता। (تفسیر روح البیان، سورۃ المنافقون، آیت ۶، ج۹، ص ۵۳۶) क्यूंकि पीर मुरीद को संवारने वाला होता है जब तक मुरीद को तमाम आलाइशों से साफ़ न करे और त़रीक़त की राह त़ै करने के लिये उसे पाक न करे समझ ले कि वोह बेचारा गुमराही में रहेगा (ह़श्त बहिश्त, स. **241**)

प्यास की शिद्दत

कुत़्बुल वासिलीन ह़ज़रते सय्यिदुना शाह आले मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप मारेहरा शरीफ़ में तशरीफ़ फ़रमा हैं। एक साह़िब सब सज्जादों में घूमे हुवे मुजाहदे रियाज़तें किये हुवे ह़ज़रत की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे येही शिकायत की, कि इतने बरसों से त़लब में फिरता हूं मक़्सूद ह़ासिल नहीं होता। फ़रमाया : ठहरो। एक हुजरे

में ख़ानक़ाह शरीफ़ के ठहराया, ख़ादिम को हुक्म दिया इन्हें मछली खाने को दी जाए और पानी का एक क़त़रा न दिया जाए। और बा'द खाना खाने के फ़ौरन हुजरा बाहर से बन्द कर दिया जाए। ख़ादिम ने मछली दी जब वोह खा चुके फ़ौरन ज़न्जीर बन्द कर दी। अब येह अन्दर से चिल्लाते हैं कि मुझे पानी दिया जाए मगर कौन सुनता है। सुब्ह़ को हुज़ूर नमाज़ के वासिते तशरीफ़ लाए ख़ादिम ने हुजरा खोला, खुलते ही पानी पर जा गिरे और जिस क़दर पिया गया ख़ूब पिया। नमाज़ के बा'द ह़ज़रत ने फ़रमाया ख़ैरिय्यत है? अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! रात तो ख़ादिमों ने मार ही डाला था कि मुझे ऐसी गर्मी में अव्वल तो मछली खाने को दी, दूसरे एक क़त़रा पानी का न दिया और प्यासा ही हुजरे में बन्द कर दिया। फ़रमाया : फिर रात कैसी गुज़री? अ़र्ज़ किया : जब तक जागता रहा पानी का ख़याल, जब सोया सिवाए पानी के और कुछ न देखा। फ़रमाया : त़लबे सादिक़ इस का नाम है, कभी ऐसी त़लब भी की थी जिस की शिकायत करते हो? वोह मुजाहदात किये हुवे, क़ल्बे साफ़ था। नफ़्स का जो धोका था फ़ौरन खुल गया और मक़्सूद ह़ासिल हो गया। (मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. **470**)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हमारी त़लब सादिक़ नहीं वरना पीर के फ़ैज़ान का दरया तो जारी है, हम ही उस दरया में उतर कर उस से सैराब नहीं होते बल्कि चाहते हैं कि किनारे पर बैठे बैठे पानी मिल जाए।

पीर पर ए'तिराज़ का सातवां सबब

मुरीद की पीर से महब्बत बे ग़रज़ हो तो मुरीद फ़ैज़ पाता है वरना महरूम रहता है और ग़रज़ पूरी न होने पर बद गुमानी का शिकार हो कर पीर पर ए'तिराज़ करने लगता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मसऊ़द दब्बाग़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स विलायत वग़ैरा के हुसूल के लिये शैख़ से महब्बत करे या शैख़ के इ़ल्म, मेहरबानी या किसी और ख़ूबी की वजह से उस से महब्बत करे तो उसे कोई फ़ाइदा नहीं होगा। बल्कि मुरीद को चाहिये कि बिग़ैर किसी ग़रज़ और लालच के शैख़ से महब्बत रखे जैसे आ़म तौ़र पर बच्चे एक दूसरे से बिग़ैर किसी ग़रज़ और लालच के मह्ज़ पसन्दीदगी के जज़्बात की बदौलत महब्बत रखते हैं। फिर मुरीद की अपने पीर से बे ग़रज़ महब्बत की वजह बयान करते हुवे फ़रमाते हैं कि अग़राज़ व मक़ासिद से मुतअ़ल्लिक़ महब्बत मुरीद को शैत़ानी वस्वसों का शिकार कर देती है, जिस के नतीजे में बा'ज़ अवक़ात महब्बत ख़त्म हो जाती है।

(الابریز، الجزء الثانی، ص ۷۵)

पीर पर ए'तिराज़ का आठवां सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! बा'ज़ अवक़ात ग़ैर की सोहबत भी पीर पर ए'तिराज़ का सबब बन जाती है, लिहाज़ा याद रखिये कि मुरीद की सोहबत का मे'यार اَلْحُبُّ فِی اللهِ وَالْبُغْضُ فِی الله होना चाहिये। या'नी महब्बत व नफ़रत सिर्फ़ रिज़ाए रब्बुल अनाम के लिये होनी

चाहिये। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی (मुतवफ़्फ़ा **973** हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि मुर्शिद जिस शख़्स को अपना दुश्मन जाने मुरीद भी उस से दुश्मनी करे और मुर्शिद जिस से दोस्ती रखे, मुरीद भी उस से दोस्ती रखे।

(الانوار القدسیہ، الجزء الثانی، ص ۳۹)

मज़ीद फ़रमाते हैं कि मशाइख़े किबार का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि मुर्शिद की मह़ब्बत की शराइत़ में से एक (अहम शर्त़) येह है कि मुरीद अपने मुर्शिद की गुफ़्तगू के इ़लावा दीगर तमाम लोगों की गुफ़्तगू सुनने से अपने कान बन्द कर ले। (या'नी मुर्शिद के ख़िलाफ़ ज़ेह्न ख़राब करने वाले की गुफ़्तगू सुनना तो दूर की बात नफ़रत के बाइ़ष उस के साए से भी भागे) पस मुरीद किसी भी मलामत करने वाले की मलामत को न सुने यहां तक कि अगर शहर के तमाम लोग किसी एक साफ़ मैदान में जम्अ़ हो कर उसे अपने मुर्शिद से नफ़रत दिलाएं (और हटाना चाहें) तो वोह लोग इस बात पर (या'नी मुरीद को मुर्शिद से दूर करने पर) कुदरत न पा सकें।

पेपर पिन की मिषाल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इस बात को यूं समझे कि पेपर पिन सिर्फ़ नर्म जगह पैवस्त होती है, सख़्त जगह में इसे जितना दबाएं वोह अन्दर जाने के बजाए ख़ुद ही टेढ़ी हो जाएगी। हम भी अपने अन्दर त़रीक़त की दीवार को सख़्त और मज़बूत़ कर लें ताकि

कोई लाख पीरो मुर्शिद के ख़िलाफ़ उक्साए और वस्वसे दिलाए मगर त़रीक़त की दीवार मज़बूत़ होने की बिना पर इस के वस्वसों की पिन हमारे दिल में दाख़िल होने के बजाए ख़ुद ही टेढ़ी हो जाए। मुर्शिद की महब्बत का सीसा अगर त़रीक़त की दीवार में पिघला कर डाल दिया जाए तो कोई वस्वसा दिल की त़रफ़ राह नहीं पाएगा।

पीर पर ए'तिराज़ का नवां सबब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात मुर्शिद अपने किसी मुरीद के ख़ुसूसी अवसाफ़ की बिना पर उस से ज़ियादा महब्बत करे या उसे कोई मन्सब अ़त़ा कर दे तो शैत़ान दूसरे मुरीदों के दिल में येह वस्वसा डालता है कि तअ़ज्जुब है ! तुम्हारे होते हुवे येह मन्सब उसे दे दिया गया ! इस दर पर त़वील अ़र्सा तुझे गुज़रा मगर उसे आते ही मक़ाम मिल गया ! ह़ालांकि ख़िदमत गुज़ारी के सबब येह ह़क़ तेरा था मगर तेरे साथ नाइन्साफ़ी की गई वग़ैरा वग़ैरा। चुनान्चे, मुरीद पर लाज़िम है कि फ़ौरन इन तमाम शैत़ानी वस्वसों को दिल से झटक दे और मुर्शिद पर कभी येह ए'तिराज़ न करे कि उस ने ऐसा क्यूं किया ? वरना नाकामी व नामुरादी का मुंह देखना पड़ेगा।

नाकाम मुरीद

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی (मुतवफ़्फ़ा **973** हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि मुरीद पर लाज़िम है कि वोह अपने मुर्शिद को कभी **क्यूं** न कहे क्यूंकि तमाम मशाइख़ का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि जिस मुरीद ने अपने मुर्शिद को **क्यूं** कहा वोह त़रीक़त में कामयाब न होगा। (الانوار القدسیہ، ص۲۶)

पीर भाइयों से ह़सद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप ने फ़ौरन इन वस्वसों को ख़ुद से दूर न किया कि मेरे पीर ने फ़ुलां को नवाज़ा और मुझे नहीं तो याद रखिये कहीं येह वस्वसे ह़सद की शक्ल न इख़्तियार कर लें, क्यूंकि अगर येह ह़सद की सूरत इख़्तियार कर गए तो बरबादी ही बरबादी है। चुनान्चे, ह़दीषे पाक में है कि **''ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाता है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा जाती है।''**

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحسد، الحدیث: ۴۲۱۰، ج۴، ص۴۷۲)

ह़सद की नुहूसत

इस ज़िम्न में दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **561** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत** सफ़ह़ा **286** से एक अ़र्ज़ व इरशाद पेशे ख़िदमत है :

अ़र्ज़ : अगर किसी मुरीद की अपने शैख़ से ज़ियादा रसाई हो इस पर उस के पीर भाई रंज रखें तो कैसा है ?

इरशाद : येह ह़सद है जो ले जाता है जहन्नम में । रब्बुल इ़ज़्ज़त तबारक व तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को येह रुतबा दिया कि तमाम मलाइका से सजदा कराया, शैत़ान ने ह़सद किया वोह जहन्नम में गया । दुन्या में अगर किसी को अपने से ज़ियादा देखे तो शुक्र बजा लाए कि मुझे इतना मुब्तला न किया और दीन में देखे तो उस की दस्त बोसी करे, उसे माने । किसी पर ह़सद करना रब्बुल इ़ज़्ज़त पर ए'तिराज़ है कि उसे क्यूं ज़ियादा दिया और मुझे क्यूं कम रखा ? (मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. **286**)

पीर बात़िन देखता है ज़ाहिर नहीं

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्अ़ रिसालत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इक्कीस साल की उ़म्र में जब अपने वालिदे माजिद के साथ ख़ातिमुल अकाबिर ह़ज़रते सय्यिद शाह आले रसूल मारेहरवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और सिलसिलए आ़लिय्या क़ादिरिय्या में इन से बैअ़त की । इन के मुर्शिदे कामिल ने (आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت को मुरीद बनाने के साथ) तमाम सिलसिलों की इजाज़त व ख़िलाफ़त और सनदे ह़दीष भी अ़त़ा फ़रमाई ।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, बाब बैअ़त व ख़िलाफ़त, जि.**1** स. **39**)

हालांकि हज़रत शाह आले रसूल قُدِّسَ سِرُّهٗ ख़िलाफ़त व इजाज़त के मुआ़मले में बड़े मोह़तात़ थे। मगर जब आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت को मुरीद होते ही जुम्ला सलासिल की इजाज़त मिली तो ख़ानक़ाह के एक ह़ाज़िर बाश से न रहा गया। अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप के ख़ानदान में तो ख़िलाफ़त बड़ी रियाज़त और मुजाहदे के बा'द दी जाती है। इन को आप ने फ़ौरन ख़िलाफ़त अ़त़ा फ़रमा दी। हज़रत शाह आले रसूल قُدِّسَ سِرُّهٗ ने उस शख़्स से इरशाद फ़रमाया : लोग गन्दे दिल और नफ़्स ले कर आते हैं, उन की सफ़ाई पर ख़ासा वक़्त लगता है मगर येह पाकीज़गिये नफ़्स के साथ आए थे। सिर्फ़ निस्बत की ज़रूरत थी। वोह हम ने अ़त़ा कर दी। फिर ह़ाज़िरीन से मुख़ात़िब हो कर फ़रमाया : मुझे मुद्दत से एक फ़िक्र परेशान किये हुवे थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह आज दूर हो गई कि क़ियामत में जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पूछेगा कि **आले रसूल हमारे लिये क्या लाया है? तो मैं अपने मुरीद अह़मद रज़ा ख़ान को पेश कर दूंगा।** फिर आप قُدِّسَ سِرُّهٗ ने आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت को वोह तमाम आ'माल व अश्ग़ाल अ़त़ा फ़रमा दिये। जो ख़ानवादए बरकातिया में सीना दर सीना चले आ रहे हैं। (अन्वारे रज़ा, स. 378)

पीर के मन्ज़ूरे नज़र से मह़ब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! औलियाए किराम व मशाइख़े इ़ज़्ज़ाम की निगाहे विलायत के सामने मुरीद का

ज़ाहिर भी होता है और बातिन भी। पीर अपने मुरीद को उस के ज़ाहिर या बातिन की बिना पर फ़ैज़ से नवाज़ते हैं। लिहाज़ा अगर पीर किसी मुरीद को नवाज़ें तो उस से ह़सद करने के बजाए उस की मह़ब्बत को सीने में बसाते हुवे अपनी कोताही पर नज़र करनी चाहिये। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی (मुतवफ़्फ़ा **973** हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि मुरीद पर लाज़िम है कि जब उस का मुर्शिद उस के पीर भाइयों में से किसी एक को उस से आगे बढ़ा दे (या कोई मन्सब अ़ता करे) तो वोह अपने मुर्शिद के अदब की वजह से अपने उस पीर भाई की ख़िदमत (और इताअ़त) करे और ह़सद हरगिज़ न करे। वरना उस के जमे हुवे पाउं फिसल जाएंगे और उसे बड़ा नुक़्सान पेश आएगा। लेकिन अगर कोई मुरीद अपने पीर भाइयों से आगे बढ़ना चाहे तो उसे चाहिये कि वोह अपने मुर्शिद की ख़ूब इताअ़त करे और अपने आप को ऐसी सिफ़ात से आरास्ता कर ले जिन के ज़रीए वोह आगे बढ़ जाने का मुस्तह़िक़ हो जाए और उस वक़्त मुर्शिद भी उसे उसी पीर भाई की त़रह़ दूसरे पीर भाइयों से आगे बढ़ा देगा क्यूंकि मुर्शिद तो मुरीदों का ह़ाकिम और इन के दरमियान अ़द्ल करने वाला होता है और बहुत कम है कि कोई मुरीद इस मरज़ से बच जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी पनाह में रखे। (الانوار القدسیہ، الجزء الثانی، ص۲۹)

मुर्शिद की नज़र

15 रमज़ानुल मुबारक 787 हि. ब मुताबिक़ 10 सितम्बर 1357 ई. को हज़रते शैख़ुल इस्लाम ख़्वाजा नसीरुद्दीन महमूद चिराग़ दहेल्वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی पर अचानक बीमारी का ग़लबा हुवा तो लोगों ने अर्ज़ की : मशाइख़ अपने विसाल के वक़्त किसी एक को मुमताज़ क़रार दे कर अपना जानशीन मुक़र्रर फ़रमाते हैं, आप भी अपना कोई जानशीन मुक़र्रर फ़रमा दीजिये। हज़रते शैख़ुल इस्लाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अच्छा, मुस्तहिक़ लोगों के नाम लिख कर लाओ। मौलाना ज़ैनुद्दीन عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ المَتِین को येह अहम ज़िम्मेदारी सोंपी गई जो यक़ीनन एक अहम शख़्सिय्यत होंगे। चुनान्चे, उन्हों ने दीगर उम्र रसीदा व पुख़्ताकार मुरीदों के बाहमी मश्वरे से एक फ़ेहरिस्त तय्यार कर के पेश की मगर उस में आप के मुरीदे ख़ास हज़रते गैसू दराज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का नाम शामिल न किया शायद इस लिये कि वोह अभी उन की निस्बत कम उम्र थे। चूंकि हज़रते शैख़ुल इस्लाम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ निगाहे बातिन से वोह कुछ मुलाहज़ा फ़रमा रहे थे जिन से येह लोग बेख़बर थे। लिहाज़ा आप ने फ़ेहरिस्त देख कर इरशाद फ़रमाया कि **तुम किन लोगों के नाम लिख लाए हो ? इन सब से कह दो ख़िलाफ़त का बार संभाल लेना हर शख़्स का काम नहीं। अपने अपने ईमान की हिफ़ाज़त की फ़िक्र करें।**

ग़ौर त़लब बात है कि इस फ़ेहरिस्त में किस क़दर ग़ौरो ख़ौज़ के बा'द अहम तरीन और बज़ाहिर बा सलाहिय्यत शख़्सिय्यतों को चुना गया होगा। निगाहे मुर्शिद के अस्रार को समझना हर एक के बस की बात नहीं। इस लिये मौलाना ज़ैनुद्दीन عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ المَتِين ने उसी फ़ेहरिस्त को मुख़्तसर कर के दोबारा आप की बारगाह में पेश कर दिया, मगर अब भी उस फ़ेहरिस्त में ह़ज़रते गैसू दराज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम न था।

तो शैख़ुल इस्लाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया कि **सय्यिद मुह़म्मद ह़ज़रत ख़्वाजा गैसू दराज़** का नाम तो तुम ने नहीं लिखा। ह़ालांकि वोही तो इस बारे गिरां को उठाने की अहलिय्यत रखते हैं, येह सुन कर सब थर थर कांपने लगे। अब जब ह़ज़रते ख़्वाजा गैसू दराज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का नाम भी फ़ेहरिस्त में लिख कर ह़ाज़िर हुवे तो ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़ौरन इस नाम पर हुक्म सादिर फ़रमा दिया। उस वक़्त ह़ज़रते गैसू दराज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की उ़म्र **36** साल से कुछ ज़ियादा न थी। (आदाबे मुर्शिदे कामिल, स.**56**)

मुर्शिद की इत़ाअ़त का सदक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ह़ज़रते सय्यिदुना गैसू दराज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को येह मर्तबा ऐसे ही न मिला बल्कि याद रखिये कि इन्हों ने कभी अपने मुर्शिद के फ़रमान से रू गर्दानी न की और न कभी अपने मुर्शिद के फ़रमान को अ़क़्ल के तराज़ू में तोलने की कोशिश की। चुनान्चे,

मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) सफ़ह़ा **298** पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना गैसू दराज़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ एक बार सरे राह बैठे थे (कि) ह़ज़रते नसीरुद्दीन मह़मूद चराग़ दहेल्वी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی की सुवारी निकली। इन्हों ने उठ कर ज़ानूए मुबारक पर बोसा दिया। ह़ज़रते ख़्वाजा ने फ़रमाया سَیِّد فروترک (या'नी) सय्यिद और नीचे बोसा दो। इन्हों ने पाए मुबारक पर बोसा लिया। फ़रमाया : سَیِّد فروترک इन्हों ने घोड़े के सुम पर बोसा दिया। एक गैसू कि रिकाब मुबारक में उलझ गया था वहीं उलझा रहा और रिकाब से सुम तक बढ़ गया। ह़ज़रत ने फ़रमाया : سَیِّد فروترک इन्हों ने हट कर ज़मीन पर बोसा दिया। गैसू रिकाब मुबारक से जुदा कर के ह़ज़रत तशरीफ़ ले गए।

लोगों को तअ़ज्जुब हुवा कि ऐसे जलील सय्यिद (और) इतने बड़े आ़लिम ने ज़ानू पर बोसा दिया और ह़ज़रत राज़ी न हुवे और नीचे बोसा देने को हुक्म फ़रमाया ? इन्हों ने पाए मुबारक को बोसा दिया और नीचे को हुक्म फ़रमाया ? घोड़े के सुम पर बोसा दिया और नीचे को हुक्म फ़रमाया ? यहां तक कि ज़मीन पर बोसा दिया। येह ए'तिराज़ ह़ज़रते सय्यिदुना गैसू दराज़ ने सुना (तो) फ़रमाया : लोग नहीं जानते कि मेरे शैख़ ने इन चार बोसों में क्या अ़त़ा फ़रमा दिया ? जब मैं ने ज़ानूए मुबारक पर बोसा दिया,

आ़लमे नासूत (आ़लमे शहादत, आ़लमे ख़ल्क़) मुन्कशिफ़ हो गया। जब पाए अक़्दस पर बोसा दिया **आ़लमे मलकूत** (आ़लमे ग़ैब, अ़र्श, आ़लमे बाला) मुन्कशिफ़ हुवा। जब घोड़े के सुम पर बोसा दिया **आ़लमे जबरूत** (कुदरत, ता़क़त, ह़श्मत, अ़ज़्मत, बुज़ुर्गी, जलाल) मुन्कशिफ़ था। जब ज़मीन पर बोसा दिया **आ़लमे लाहूत** (आ़लमे ज़ाते इलाही जिस में सालिक को **फ़ना फ़िल्लाह** का मक़ाम ह़ासिल होता है, गंज मख़्फ़ी, मक़ामे मह़विय्यत) का इन्किशाफ़ हो गया।

(मलफ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स.**298** बह़वाला सबए़ सनाबिल, सम्बला दुवुम, स.**68,69**)

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) देख रहा है

मन्क़ूल है कि एक पीर साह़िब अपने उ़म्र रसीदा मुरीदों के बजाए एक नौजवान मुरीद की ज़ियादा इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाया करते। जो बा'ज़ उ़म्र रसीदा मुरीदों को एक आंख न भाती, चुनान्चे, एक मुरीद ने उन से इस के मुतअ़ल्लिक़ शिकवा करते हुवे अ़र्ज़ की, कि आप इस नौजवान को हम उ़म्र रसीदा व पुख़्ताकार मुरीदों पर इस क़दर तरजीह़ क्यूं देते हैं? तो पीर साह़िब ने इरशाद फ़रमाया : मेरा येह मुरीद अदब व अ़क़्ल में तुम सब से फ़ाइक़ व बुलन्द है, जिस की वजह से मैं इसे बहुत चाहता हूं और इस का षुबूत मैं तुम्हें अभी दे देता हूं ताकि तुम्हें मा'लूम हो जाए कि इस में कौन सी ख़ूबी है। फिर पीर साह़िब ने कुछ परन्दे मंगवाए और अपने तमाम मुरीदों को एक एक परन्दा और एक एक छुरी दे कर फ़रमाया : इस परन्दे को

ऐसी जगह ज़ब्ह़ कर के लाओ जहां कोई देखने वाला मौजूद न हो। उस नौजवान को भी इसी त़रह़ परन्दा दिया और उस से भी वोही बात फ़रमाई। थोड़ी देर के बा'द इन में से हर एक ज़ब्ह़ किया हुवा परन्दा ले कर वापस आया लेकिन वोह नौजवान ज़िन्दा परन्दा हाथ में पकड़े हुवे वापस आया, पीर साहिब ने पूछा कि दूसरों की त़रह़ तुम ने इसे क्यूं ज़ब्ह़ न किया ? उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मुझे कोई ऐसी जगह नहीं मिली जहां कोई देखता न हो क्यूंकि मैं जहां भी गया तो पाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **मुझे देख रहा है** ! इस लिये मजबूरन वापस ले आया। येह सुन कर तमाम पीर भाइयों की आंखों पर पड़ा हुवा ह़िजाब दूर हो गया और उन्हों ने न सिर्फ़ पीर साहिब से मुआ़फ़ी मांगी बल्कि अ़र्ज़ की : वाक़ेई येह नौजवान इस बात का ह़क़दार है कि इस की इ़ज़्ज़त की जाए। (احیاء علوم الدین، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ، باب المرابطۃ الثانیۃ، ج۵، ص۱۲۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारी निगाह ज़ाहिरी सलाह़िय्यत व शख़्सिय्यत को देखती है मगर मुर्शिदे कामिल अपनी निगाहे विलायत से खरे खोटे की पहचान कर के बेहतर ही को सामने लाते हैं और सामने आने वाला निगाहे मुर्शिद की बरकत से ऐसा बा कमाल हो जाता है कि लोग इस के ज़रीए़ होने वाले काम देख कर शशदर रह जाते हैं मगर कामयाब वोही रहते हैं जो इस ह़क़ीक़त को हरदम पेशे नज़र रखते हैं कि येह तमाम

कमालात किस की निगाह के तुफ़ैल हैं और यक़ीनन मेरा हर अ़मल किसी की नज़रों से क़ाइम है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब के ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए और मदनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए और मुर्शिद की बे अदबी से महफ़ूज़ फ़रमाए।

اٰمین بجاہِ النبی الکریم الامین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ماخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مولف
1	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
2	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفی ۱۳۴۰ھ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
3	تفسیرِ نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ ضیاء القرآن پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور
4	صحیح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ دار ابن حزم، بیروت
5	سنن ابی داود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ دار احیاء التراث العربی، بیروت
6	سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ دار الفکر، بیروت
7	ابن ماجہ	امام ابوعبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
8	المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ دار الفکر، بیروت
9	المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ دار الفکر، بیروت
10	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیتمی، متوفی ۸۰۷ھ دار الفکر، بیروت
11	مرأۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ ضیاء القرآن پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور

12	احیاءعلوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ دار صادر، بیروت ۲۰۰۰ء
13	رسالہ قشیریہ	امام ابو القاسم عبد الکریم ہوازن قشیری متوفی ۴۶۵ھ دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
14	الابریز	الشیخ احمد بن المبارک المغربی المالکی، متوفی ۱۱۵۵ھ موافقۃ ادارۃ الافتاء العام فی وزارۃ الاوقاف السوریہ
15	عوارف المعارف	امام شہاب الدین ابی حفص عمر بن محمد بغدادی متوفی ۶۳۲ھ دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
16	کشف المحجوب	داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری متوفی ۴۶۵ھ نوائے وقت پرنٹرز مرکز الاولیاء لاہور
17	الانوار القدسیہ	عبد الوہاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ المکتبۃ العلمیۃ، بیروت
18	جامع کرامات اولیاء	علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفی ۱۳۵۰ھ مرکز اہل سنۃ برکاتِ رضا
19	ہشت بہشت	ملفوظات خواجگانِ چشت شبیر برادرز، مرکز الاولیاء لاہور
20	بہجۃ الاسرار	ابو الحسن نور الدین علی بن یوسف شطنوفی، متوفی ۷۱۳ھ دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۳ھ
21	اصلاحِ اعمال	سیدی عبد الغنی نابلسی حنفی، متوفی ۱۱۴۱ھ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
22	فتاوی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
23	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
24	انوار رضا	
25	جنتی زیور	علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
26	آداب مرشد کامل	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	पीर की मुरीद से तवक़्क़ोआ़त	17
जाता है तो जाने दो	1	अपनी कमज़ोरी का ए'तिराफ़ कर लो	18
मुजरिम से मुंह मोड़ लो	2	पीर पर ए'तिराज़ का दूसरा सबब	20
पीर की नाराज़ी	3	पीर का इम्तिह़ान लेने वाले का अन्जाम	21
मुर्शिद को फ़ौरन राज़ी कर लो	3	और जन्नत ग़ाइब हो गई !	23
मुरीदों को राज़ी करने वाला पीर	4	पीर पर ए'तिराज़ का तीसरा सबब	25
हज़ारों के मजमअ़ में मुआ़फ़ी	8	क्या कुश्ती लडने वाला भी पीर हो सकता है ?	25
मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी व मफ़्हूम	10		
नाशुक्री	12	मुरीद के लिये ज़ह्रे क़ातिल	26
पीरे कामिल को तक्लीफ़ देना	13	पीर भी आख़िर इन्सान है	27
औलियाए कामिलीन से दुश्मनी का वबाल	13	ख़िलाफ़े सुन्नत बात देख कर शैख़ से फिरना कैसा ?	28
कुछ वली पोशीदा होते हैं	14		
कामिल पीर पर ए'तिराज़ के नव अस्बाब	15	पीर मा'सूम नहीं	29
पीर पर ए'तिराज़ का पहला सबब	15	पीर पर ए'तिराज़ का चौथा सबब	30
क्या पीर का ह़क़ अदा हो सकता है ?	16	इ़ल्म की आफ़त	31

बा अदब बा नसीब, बे अदब बे नसीब	32	पीर पर ए'तिराज़ का नवां सबब	45
तुम ने ज़बान सीधी की है हम ने दिल	36	नाकाम मुरीद	46
पीर पर ए'तिराज़ का पांचवां सबब	37	पीर भाइयों से ह़सद	46
दूसरों के पीरों पर भी ए'तिराज़ न कीजिये	38	ह़सद की नुहूसत	46
पीर पर ए'तिराज़ का छटा सबब	39	पीर बातिन देखता है ज़ाहिर नहीं	47
पीर तो देता है हम नहीं लेते	41	पीर के मन्ज़ूरे नज़र से महब्बत	48
प्यास की शिद्दत	41	मुर्शिद की नज़र	50
पीर पर ए'तिराज़ का सातवां सबब	43	मुर्शिद की इताअ़त का सदक़ा	51
पीर पर ए'तिराज़ का आठवां सबब	43	अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) देख रहा है !	53
पेपर पिन की मिषाल	44	माख़ज़ो मराजेअ़	55

दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान हज़रते मौलाना मुहम्मद इमरान अ़त्तारी سلّمه الباری के तहरीरी बयानात

तब्अ़ शुदा

(1) फ़ैज़ाने मुर्शिद (कुल सफ़हात : 32)

(2) एहसासे ज़िम्मेदारी (कुल सफ़हात : 48)

(3) मदनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात : 22)

(4) मदनी मश्वरे की अहम्मिय्यत (कुल सफ़हात : 32)

(5) सीरते सय्यिदुना अबुदरदा رضی اللہ تعالیٰ عنہ (कुल सफ़हात : 75)

(6) बुराइयों की मां (कुल सफ़हात : 112)

(7) ग़ैरत मन्द शोहर

(8) सहाबी की इनफ़िरादी कोशिश

(9) पीर पर ए'तिराज़ मन्अ़ है

(10) जन्नत का रास्ता (कुल सफ़हात : 56)

(11) मक़्सदे ह़यात (कुल सफ़हात : 60)

(12) सदक़े का इन्आ़म (कुल सफ़हात : 60)

(13) एक आंख वाला आदमी (कुल सफ़हात : 60)

(14) जन्नत की तय्यारी (कुल सफ़हात : 106)

(15) वक़्फ़े मदीना (कुल सफ़हात : 74)

(16) मदनी कामों की तक़्सीम के तक़ाज़े (कुल सफ़हात : 52)

(17) सूद और उस का इलाज (कुल सफ़हात : 92)

(18) प्यारे मुर्शिद (कुल सफ़हात : 48)

(19) फ़ैसला करने के मदनी फूल

(20) जामेअ़ शराइत पीर (कुल सफ़हात : 88)

(21) कामिल मुरीद (कुल सफ़हात : 48)

(22) अमीरे अहले सुन्नत की दीनी ख़िदमात (कुल सफ़हात : 480)

(23) हमें क्या हो गया है ? (कुल सफ़हात : 116)

(24) मौत का तसव्वुर (कुल सफ़हात : 44)

(25) बेटी की परवरिश (कुल सफ़हात : 72)

(26) गुनाहों की नुहूसत

ज़ेरे तरतीब

(1) एक ज़माना ऐसा आएगा

(2) मरज़ से क़ब्र तक

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

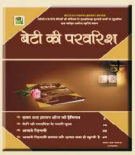

-: मक्तबतुल मदीना की शाख़ें :-

❁... अह्मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अह्मदाबाद-1, फ़ोन : 9327168200
❁... मुम्बई :- 19 - 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
❁... नागपूर :- सैफ़ी नगर रोड़, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
❁... अजमेर :- 19 / 216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385
❁... हुबली :- A.J मुधल कोम्प्लेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 08363244860
❁... हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
❁... बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तकया, मदन पूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net